VOL- XI ISSUE- IX SEPTEMBER 2024 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 8.02 ISSN 2349-638x

अनुवाद का परिष्कारकर्ता: समतुल्यता सिद्धांत और पुनरीक्षण पद्धति

डॉ. दिपक जाधव 'अक्षर'
हिंदी विभाग प्रमुख
वेणूताई चव्हाण कॉलेज, कराड
dipakjadhav.hindi@gmail.com

किसी समय अनुवाद कार्य पाप माना जाता था। लेकिन संप्रति अनुवाद संपर्क का प्रमुख साधन बनता जा रहा है। भाषिक विभेदता की समस्या पर अनुवाद कारगर उपाय साबित हुआ है। इसी के चलते आज अनुवाद की उपयोगिता, महत्ता, रोजगार निर्मिती क्षमता आदि पर चर्चाएं चल रही है। हर विश्वविद्यालय अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाने के लिए उत्सुक है। अनुवाद का सैद्धांतिक पक्ष अनुवाद की तात्विक जानकारी से परिचित कराता है। यह जानकारी अनुवाद संबंधी कई भ्रामक धरणाओं को तोडते हुए अनुवादक का मार्गदर्शन करती है। सैद्धांतिकी के जानकारी से अनुवाद कला में निखार आता है। अनुवाद भाषाओं की सीमाओं को तोड़ने का काम करता है। "विश्व में अनेक भाषाएँ प्रयुक्त होती है। इनमें से अधिकांश भाषाएँ ऐसी है जिनका साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक साहित्य समृध्द है। किसी भी व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं है कि वह अनेक भाषाओं का सम्यक अध्ययन एवं ज्ञान प्राप्त कर सके। अतएव उसे अनुवाद का आश्रय लेना पडता है। "[1]

अनुवाद दो भाषाओं के बीच सेतु का कार्य करता है। वह स्त्रोत भाषा के प्राण को लक्ष्य भाषा में स्थापित करने की दुष्कर प्रक्रिया है। अनुवाद में मूल रचनाकार के विचारों एवं शैली का अनुसरण करना पडता है। भले ही अनुवाद को पुन:सृजन कहा जाता हो परंतु यह एक असीधारा व्रत है, जिसमें सृजन-सी स्वतंत्रता नहीं होती। यह कार्य तलवार की नोक पर चलने का महत्त कठीनतम कार्य है। प्रशिक्षण, सैद्धांतिक जानकारी एवं अनुवादक की प्रतिभा इस कठीन कार्य में उसकी सहाय्यता करते हैं।

जब मनुष्य ने एक से अधिक भाषाएं सिखने का प्रयास किया तभी से अनुवाद की प्रक्रिया आरंभ हुयी होगी। हालांकी यह प्राथमिक अवस्था मानसिक रही हो किंतु यही स्थिति अनुवाद के अविष्कार की जननी है। समय के अंतराल में ज्ञान के दबाव तथा भाषा विभेद की समस्या ने अनुवाद की अनिवार्यत: पर मुहर लगा दी। अनिवार्यत: और वक्त की कमी ने अनुवाद कार्य में तेजी लाई पर उसकी स्तरीयता का सवाल खडा होने लगा। अनुवाद शब्द के स्थान पर समानार्थी शब्द रखना नहीं है। इसमें चयन, समझ, औचित्य की दुविधा है, जो भाषा संस्कार और संस्कृति का बोध कराती है। " भाषा का सम्बन्ध इतिहास, समाज और संस्कृति की परम्पराओं, मनुष्य की मानसिकता, संस्कार, रुचि, योग्यता, उसकी पृष्ठभूमि तथा परिवेश से होता है। इन सभी तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि भाषा का शाब्दिक आधार ही अनुवाद का नियामक नहीं है; परन्तु अनुवाद भाव, भाषाओं, मानसिकता के विभिन्न पहलुओं से जुड़कर सिर्फ भाषा का अनुवाद न रहकर मनुष्य की मानसिकता के साक्षात्कार का साधन बन जाता है।"[2]

अनुवादक भाषा की प्रकृति, अनुद्य विषय, कलात्मकता, अर्थ संप्रेषण के बजाय अनुवादक कार्य

पूर्ति की ओर उन्मुख हुआ। परिणामत : अनुवाद की क्षति होने लगी। इसी कारण अनुवाद के समतुल्यता सिद्धांत एवं पुनरीक्षण की ओर ध्यान आकर्षित किया जा रहा है।

समतुल्यता सिद्धांत मूल पाठ और अनुदय पाठ के मिलान की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया न केवल अर्थगत है बल्कि इसमें शैली, कलात्मकता, भाषिक विशेषता आदि को समाहित किया जाता है। अनुवाद के पश्चात अनुवादक अनुद्य कृति का मूल कृति से मिलान करें तो उसे अनुद्य कृति के गुण- दोषो का यथायोग्य परिचय हो जाता है। मिलान से अनुवादक यह देखने की कोशिश करता है कि लक्ष्य भाषा स्त्रोत भाषा के गुणों के अनुसार ही है या उसमें न्युनता आई है। इसी स्थिती में न्युनानुवाद, अधिकानुवाद का पता चलता है जो अनुवाद की दृष्टि से हेय स्थिति है। कभी अनुवादक ' जोडने - छोडने' की अतिरिक्त छुट लेता है। तब अनुद्य पाठ मूल से अधिक कहने की कोशिश करता है। ऐसे में मूल लेखक के बजाय अनुवादक का व्यक्तित्व अनुद्य कृति पर छा जाता है। इस दोष से बचने के लिए अनुवादक को मूल पाठ और अनुद्य पाठ का मिलान करना चाहिए। "अनूद्य और अनूदित सामग्री की तुलना कर अनुवाद को मूल के निकटतम ले जाकर उसके समान बनाने की कोशिश की जाती है। मूल से मिलान अर्थात् तुलना कर उसे मूल के अनुरूप बनाना इस चरण का प्रधान प्रयोजन होता है। उसमें न अर्थ विस्तार हो, न अर्थ संकोच, न अर्थयोग हो, न अर्थहानि और न ही अर्थान्तरण। तुलना का यह कार्य अनुवादक को वस्तुनिष्ठता, तटस्थता तथा निष्पक्षता से करना आवश्यक है।"[3]

समतुल्यता सिद्धांत अनुद्य पाठ के परिष्कार की प्रक्रिया है। अनुवाद कई बार शब्दों के फेर में उलझकर रह जाता है क्योंकि किन्हीं दो भाषाओं की शब्द संपदा एक-सी नहीं होती और न ही शब्दों की अर्थवत्ता समान होती है। अनुवादक मूल के निकटतम पहुंचने की कोशिश करता है और इसी के अनुरूप वह शब्द चयन करता रहता है। अनुवादक के नजरिए से उसका शब्द चयन उचित और योग्य होता है परंतु वह मूल पाठ के अनुरूप होना चाहिए। काव्य की बात करें तो मिलान द्वारा अनुवादक देख सकता है कि अलंकार, छंद, लय, प्रतीक, अर्थछटाएं, तुक आदि में कही कमी तो नहीं आई है। मूल कविता के अर्थ और भाव प्रेषण में क्षति तो नहीं हुई है। समतुल्य सिद्धांत का ज्ञाता अनुवादक अनुवाद के तुरंत बाद अपने कार्य की इतिश्री समझने के बजाय संयम का परिचय देते हुए मूल पाठ व अनुद्य पाठ की तुलना कर अनुद्य पाठ को अधिक - से - अधिक मुलनिष्ट बनाने का प्रयास करता है। अनुवादक अक्सर शब्दों से जुझते - जुझते अनुवाद का कठीनतम कार्य पूरा करता है। लेकिन वह मिलान के आवश्यक कार्य से चूक जाता है और यहीं उसके अनुवाद में कई त्रुटीया रहने की गुंजाइश होती है जिन्हे आसानी से टाला जा सकता था।

'अनुवाद अनुवाद न लगे' यही अनुवाद की सफलता का मानदंड है। ऐसा अनुवाद होने के लिए अनुवादक का प्रतिभासंपन्न होना, संयमित होना और अनुवाद के सैद्धांतिक पक्ष का ज्ञाता होना आवश्यक है। अनुवाद श्रमसाध्य कार्य होने के कारण अनुवादक को व्यस्त और कार्यमग्न होना चाहिए। इस कार्य में अनुवादक को समतुल्यता सिद्धांत एवं पुनरिक्षण पद्धती विशेष सहाय्यता प्रदान करती है।

पुनरिक्षण का व्युत्पत्तिगत अर्थ है - पुन: ईक्षन' अर्थात 'फिर से देखना'। अनुवाद के क्षेत्र में पुनरिक्षण 'अनुवाद के संशोधन' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। अनुवादक अनुवाद करके अपने अनुवाद को एक बार देख चुका है, दुसरा व्यक्ती अर्थात् पुनरिक्षक उसको फिर से देखता है, अनुवाद का पुन:ईक्षन करता है, अनुवाद की योग्यता को जांचने की इसी प्रक्रिया को पुनरिक्षण कहा जाता है। विशेष रूप से सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक विषयों के अनुवाद में रूढ़ि- परंपराएं, तीज-त्यौहार-उत्सव, रहन-सहन खानपान संबंधी विशेषताएं अनुवादक के सामने दिक्कतें पैदा कर सकती हैं। ऐसे में उसे दो भाषाओं के समान सूत्र को ढूंढना पड़ता है। "अनूदित पाठ की समीक्षा और मूल्यांकन के माध्यम से

हम तुलनात्मक तथा व्यतिरेक भाषा-अध्ययन को एक नई दिशा दे सकते हैं और भारतीय भाषाओं की समाजिक-सांस्कृतिक एकता प्रमाणित कर सकते हैं।"[4]

अनुवादक लेखक की मूल प्रेरणा तक पाठ के माध्यम से पहुंच, उसे अनुवाद में उतारने की कोशिश करता है। इसमें कथ्य और कथन प्रणाली दोनों पर विशेष ध्यान होता है। सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद में यह स्थिति और भी जटिल बन जाती है। अनुवादक अपनी सर्जनात्मक शक्ती का प्रयोग करें तो वह अपनी प्रतिभा के दबाव में अधिक छुट लेने की अशंका बनी रहती है। ऐसे में पुनरीक्षण द्वारा इस अप्रयोजित प्रभाव से अनुद्य पाठ को बचा कर, उसे मुलनिष्ठ बनाने में सहाय्यता होती है। पुनरिक्षण द्वारा न केवल अनुद्य पाठ की शैली, भाषा, कथ्य का सुधार किया जाता है बल्कि विषय ज्ञान, प्रस्तुतीकरण, संप्रेषनियता का भी परिष्कर किया जाता है। इस प्रकार अनुवादक को अनुवाद प्रविधि, अनुवाद प्रशिक्षण एवं अनुवाद कार्यशालाओं से निश्चित ही लाभ होता है।

" वास्तव में अनुवाद एक संश्लिष्ट प्रक्रिया है जो पाठ सापेक्ष होने के साथ अनुवादक के व्यक्तित्व की छाप को भी अंकित करती है। सही अर्थों में अनुवाद स्रोत भाषा के प्रतीकों के संकेत अर्थों का लक्ष्य भाषा में अंतरण का प्रमाणिक प्रयास है। आधुनिक युग में जीवन के अनेक क्षेत्रों की समृद्धि के साथ भाषा तथा संस्कृति के संस्कार वृद्धि के लिए अनुवाद एक अनिवार्य आवश्यकता के रूप में उभर कर सामने आया है। "[5]

इस रूप में अनुवाद प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण अंग अनुवादक बन जाता है। उसकी योग्यता-अयोग्यता, कुशलता- अकुशलता पर अनुवाद की सफलता निर्भर होती है। अनुवादक की योग्यता, उसके कार्य में गुणात्मक वृद्धी लाती है। अनुवाद कार्य के सुचारू मार्गक्रमन के लिए अनुवाद की सैद्धांतिक जानकारी होना लाभप्रद है। अनुवाद प्रविधि के ज्ञान के अभाव में अनुवादक आनन - फानन में अपना काम जैसे - तैसे निपटा देता है, इससे अनुवाद तथा अनुवादक दोनों की प्रतिमा धुमिल हो जाती है। नव अनुवादकों को चाहिये कि वह पुरी तैयारी के साथ अनुवाद कार्य में संलग्न हो। प्रशिक्षण और प्रविधि को गंभीरता से ग्रहण करें। जिनमें परिश्रम करने की तयारी है एवं संयम की उच्चता के साथ प्रतिभा है, उनके लिए अनुवाद का क्षेत्र में बड़े अवसर हाथ पसारे खडे हैं।

संदर्भ:-

1) संपा. डॉ. मनोहर सराफ, डॉ. शिवाकांत गोस्वामी - अनुवाद सिद्धांत एवं स्वरूप, पृष्ठ 11.
2) विनोद गोदरे - प्रयोजनमूलक हिंदी पृष्ठ 108
3) डॉ. अर्जुन चौहान - अनुवाद चिंतन, पृष्ठ 63
4) डॉ. अंबादास देशमुख - प्रयोजनमूलक हिंदी अधुनातन आयाम, पृष्ठ 542
5) दंगल झाल्टे - प्रयोजनमूलक हिंदी: सिद्धांत और प्रयोग, पृष्ठ 104-105
6) अनुवाद विज्ञान - भोलानाथ तिवारी